قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾

31. (इब्राहीम عليه السلام ने. कहा : ऐ भेजे हुए फ़रिश्तो ! (इस बिशारत के अ़लावा) तुम्हारा (आने का) बुन्यादी मक़्सद क्या है?

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾

32. उन्होंने कहा : हम मुजरिम क़ौम (या'नी क़ौमे लूत) की तरफ़ भेजे गए हैं।

33. ताकि हम उन पर मिट्टी के पथरीले कंकर बरसाएं।

34. (वोह पथ्थर जिन पर) ह़द से गुज़र जानेवालों को लिए आप के रब की तरफ़ से निशान लगा दिया गया है।

فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾ فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾

35.फिर हमने हर उस शख़्स को (क़ौमे लूत की बस्ती से) बाहर निकाल दिया जो उस में अह्ले ईमान में से था।

36. सो हमने उस बस्तीमें मुसलमानों के एक घर के सिवा (और कोई घर) नहीं पाया (उस में ह़ज़रत लूत عليه السلام और उन की दो साहिबज़ादियां थीं।)

وَ تَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾

37. और हमने उस (बस्ती) में उन लोगों के लिए (इ़ब्रत की) एक निशानी बाक़ी रख्खी जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं।

وَ فِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾

38. और मूसा (عليه السلام के वाक़िए़) में (भी निशानियां हैं) जब हमने उन्हें फ़िरऔ़न की तरफ़ वाज़ेह़ दलील दे कर भेजा।

فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَ قَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾

39. तो उसने अपने अराकीने सल्तनत समेत रूगर्दानी की और केहने लगा : (येह) जादूगर या दीवाना है।

فَاَخَذْنٰهُ وَ جُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾

40. फिर हमने उसे और उसके लश्कर को (अ़ज़ाब की) गिरफ़्त में ले लिया और उन (सब) को दरिया में ग़र्क़ कर दिया और वोह था ही क़ाबिले मलामत काम करनेवाला।

وَ فِیۡ عَادٍ اِذۡ اَرۡسَلۡنَا عَلَیۡهِمُ
الرِّیۡحَ الۡعَقِیۡمَ ﴿ۚ۴۱﴾

41. और (क़ौमे) आ़द (की हलाकत) में भी (निशानी) है जबकि हमने उन पर बे ख़ैरो बरकत हवा भेजी।

مَا تَذَرُ مِنۡ شَیۡءٍ اَتَتۡ عَلَیۡهِ اِلَّا
جَعَلَتۡهُ کَالرَّمِیۡمِ ﴿ؕ۴۲﴾

42. वोह जिस चीज़ पर भी गुज़रती थी उसे रेज़ रेज़ा किए बिग़ैर नहीं छोड़ती थी।

وَ فِیۡ ثَمُوۡدَ اِذۡ قِیۡلَ لَهُمۡ تَمَتَّعُوۡا
حَتّٰی حِیۡنٍ ﴿۴۳﴾

43. और (क़ौमे) समूद (की हलाकत) में भी (इब्रत की निशानी है) जब कि उन से कहा गया कि तुम एक मुअ़य्यना मुद्दत तक फ़ाइदा उठा लो।

فَعَتَوۡا عَنۡ اَمۡرِ رَبِّهِمۡ فَاَخَذَتۡهُمُ
الصّٰعِقَةُ وَ هُمۡ یَنۡظُرُوۡنَ ﴿۴۴﴾

44. तो उन्होंने अपने रबके हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें हौलनाक कड़कने आन लिया और वोह देखते ही रेह गए।

فَمَا اسۡتَطَاعُوۡا مِنۡ قِیَامٍ وَّ مَا
کَانُوۡا مُنۡتَصِرِیۡنَ ﴿ۙ۴۵﴾

45. फिर वोह न खड़े रेहने पर क़ुदरत पा सकेऔर न वोह (हम से) बदला ले सक्नेवाले थे।

وَ قَوۡمَ نُوۡحٍ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ اِنَّهُمۡ کَانُوۡا
قَوۡمًا فٰسِقِیۡنَ ﴿۴۶﴾ ع

46. और उस से पहले नूह(عليه السلام) की क़ौम को (भी हलाक किया), बेशक वोह सख़्त ना फ़रमान लोग थे।

وَ السَّمَآءَ بَنَیۡنٰهَا بِاَیۡىدٍ وَّ اِنَّا
لَمُوۡسِعُوۡنَ ﴿۴۷﴾

47. और आस्मानी काइनात को हमने बड़ी क़ुव्वत के ज़रीए से बनााया और यक़ीनन हम (इस काइनात को) वुस्अ़त और फैलाव देते जा रहे हैं।

وَ الۡاَرۡضَ فَرَشۡنٰهَا فَنِعۡمَ الۡمٰهِدُوۡنَ ﴿۴۸﴾

48. और (सत्हे) ज़मीन को हम ही ने (क़ाबिले रहाइश) फ़र्श बनाया सो हम क्या ख़ूब संवारने और सीधा करनेवाले हैं।

وَ مِنۡ کُلِّ شَیۡءٍ خَلَقۡنَا زَوۡجَیۡنِ
لَعَلَّکُمۡ تَذَکَّرُوۡنَ ﴿۴۹﴾

49. और हमने हर चीज़ से दो जोड़े पैदा फ़रमाए ताकि तुम ध्यान करो और समझो।

فَفِرُّوۡۤا اِلَی اللّٰهِ ؕ اِنِّیۡ لَکُمۡ مِّنۡهُ
نَذِیۡرٌ مُّبِیۡنٌ ﴿ۚ۵۰﴾

50. पस तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़ चलो, बेशक मैं उस की तरफ़ से तुम्हें खुला डर सुनानेवाला हूं।

وَ لَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّیْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ۙ﴿۵۱﴾

51. और अल्लाह केसिवा कोई दूसरा मा'बूद न बनाओ, बेशक मैं उसकी जानिब से तुम्हें खुला डर सुनानेवाला हूं।

كَذٰلِكَ مَاۤ اَتَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۚ﴿۵۲﴾

52. इसी तरह उन से पहले लोगों केपास भी कोई रसूल नहीं आया मगर उन्हों येही कहा कि (येह) जादूगर है दीवाना है।

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۚ﴿۵۳﴾

53. क्या वोह लोग एक दूसरे को इस बात की वसिय्यत करते रहे? बल्कि वोह (सब) सरकशो बाग़ी लोग थे।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَاۤ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ۖ﴿۵۴﴾

54. सो आप उन से नज़रे इल्तिफ़ात हटा लें पस आप पर (उन के ईमान न लाने की) कोई मलामत नहीं है।

وَّ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۵۵﴾

55. और आप नसीह़त करते रहें कि बेशक नसीह़त मोमिनों को फ़ाइदा देती है।

وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾

56. और मैं ने जिन्नात और इन्सानों को सिर्फ़ इसी लिए पैदा किया कि वोह मेरी बंदगी करें।

مَاۤ اُرِیْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّ مَاۤ اُرِیْدُ اَنْ یُّطْعِمُوْنِ ﴿۵۷﴾

57. न मैं उन से रिज़्क़ (या'नी कमाई) तलब करता हूं और न इस का तलबगार हूं कि वोह मुझे (खाना) खिलाएं।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِیْنُ ﴿۵۸﴾

58. बेशक अल्लाह ही हर एक का रोज़ी रसां है, बड़ी क़ुव्वतवाला है, ज़बरदस्त मज़बूत है। (उसे किसी की मदद-व-तआ़वुन की ह़ाजत नहीं)।

فَاِنَّ لِلَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا یَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿۵۹﴾

59. पस उन ज़ालिमों के लिए (भी) हिस्सए अ़ज़ाब मुक़र्रर है उनके (पहले गुज़रे हुए) साथियों के हिस्सए अ़ज़ाब की तरह़, सो वोह मुझ से जलदी तलब न करें।

فَوَیْلٌ لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ یَّوْمِهِمُ الَّذِیْ یُوْعَدُوْنَ ﴿۶۰﴾ ع ۳/۱۴/۲

60. सो काफ़िरों के लिए उनके उस दिन में बड़ी तबाही है जिस का उन से वा'दा किया जा रहा है।

आयातुहा 49 | 52 सूरतुत तूरि मक्किय्यतुन 76 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

وَالطُّوْرِ ۙ﴿۱﴾

1. (कोहे)तूर की क़सम।

وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۙ﴿۲﴾

2. और लिखी हुई किताब की क़सम।

فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۙ﴿۳﴾

3. (जो) खुले सह़ीफ़े में (है)।

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۙ﴿۴﴾

4. और (फ़रिश्तों से) आबाद घर (या'नी आस्मानी का'बे) की क़सम।

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۙ﴿۵﴾

5. और ऊंची छत (या'नी बुलन्द आस्मान या अ़र्शे मुअ़ल्ला) की क़सम।

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۙ﴿۶﴾

6. और उबलते हुए समन्दर की क़सम।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ﴿۷﴾

7. बेशक आप के रब का अ़ज़ाब ज़रूर वाक़े' होगा।

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۙ﴿۸﴾

8. उसे कोई दफ़ा' करनेवाला नहीं।

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۙ﴿۹﴾

9. जिस दिन आस्मान सख़्त थरथराहट के साथ लरज़ेगा।

وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ؕ﴿۱۰﴾

10. और पहाड़ (अपनी जगह छोड़ कर बादलों की तरह) तेज़ी से उड़ने और (ज़र्रात की तरह) बिखरने लगेंगे।

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ﴿۱۱﴾

11. सो उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी तबाही है।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۘ﴿۱۲﴾

12. जो बातिल (बेहूदगी) में पड़े ग़फ़लत का खेल खेल रहे हैं।

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ؕ﴿۱۳﴾

13. जिस दिन को वोह धकेल धकेल कर आतिशे दोज़ख़ की तरफ़ लाए जाएंगे।

هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۱۴﴾

14. (उनसे कहा जाएगा :) येह है वोह जहन्नम की आग जिसे तुम झुटलाया करते थे।

اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۚ﴿۱۵﴾

15. सो क्या येह जादू है या तुम्हें दिखाई नहीं देता।

وقف لازم

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾

16. इसमें दाख़िल हो जाओ, फिर तुम सब्र करो या सब्र न करो, तुम पर बराबर है, तुम्हें सिर्फ़ उन ही कामों का बदला दिया जाएगा जो तुम करते रहे थे।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ نَعِيْمٍ ۙ﴿۱۷﴾

17. बेशक मुत्तक़ी लोग बहिश्तों और ने'मतों में होंगे।

فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَ وَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿۱۸﴾

18. ख़ुश और लुत्फ़ अंदोज़ होंगे उन (अ़ताओं) से जिन से उनके रबने उन्हें नवाज़ा होगा, और उनका रब उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा।

كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۙ﴿۱۹﴾

19.(उन से कहा जाएगा) तुम उन (नेक) आ'माल के सिले में जो तुम करते रहे थे खूब मज़े से खाओ और पियो।

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَ زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿۲۰﴾

20. वोह सफ़ दर सफ़ बिछे हुए तख़्तों पर तकिये लगाए (बैठे) होंगे, और हम गोरी रंगत (और) दिलकश आंखोंवाली हूरों को उन की ज़ौजिय्यत में दे देंगे।

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ اتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَ مَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿۲۱﴾

21. और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलादने ईमान में उनकी पैरवी की, हम उनकी औलाद को (भी दरजाते जन्नत में) उनके साथ मिला देंगे (ख़्वाह उनके अपने अ़मल उस दर्जे के न भी हों येह सिर्फ़ उन के सालेह आबाअ के इकराम में होगा) और हम उन (सालेह आबाअ) के सवाबे आ'माल से भी कोई कमी नहीं करेंगे, (अ़लावा इसके) हर शख़्स अपने ही अ़मल (की जज़ा-व-सज़ा) में गिरफ़्तार होगा।

وَ اَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّ لَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿۲۲﴾

22. और हम उन्हें फल (मेवे) और गोश्त, जो वोह चाहेंगे ज़ियादा से ज़ियादा देते रहेंगे।

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَ لَا تَاْثِيْمٌ ﴿۲۳﴾

23. वहां येह लोग झपट झपट कर (शराबे तहूर के) जाम लेंगे, उस (शराबे जन्नत) में न कोई बेहूदा गोई होगी और न गुनाहगारी होगी।

وَ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾

24. और नव जवान (ख़िदमत गुज़ार) उन के इर्द गिर्द घूमते होंगे, गोया वोह ग़िलाफ़ में छुपाए होए मोती हैं।

وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. और वोह एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर बाहम पुर्सिशे अह्वाल करेंगे।

قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

26. वोह कहेंगे : बेशक हम इस से पह्ले अपने घरों में (अ़ज़ाबे इलाही से) डरते रेहते थे।

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَ وَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾

27. पस अल्लाहने हम पर एह्सान फ़रमा दिया और हमें नारे जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लिया।

اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ ع ١ ٢٨ ٣

28. बेशक हम पहले से ही उसी की इबादत किया करते थे, बेशक वोह एह्सान फरमानेवाला बड़ा रह्म फरमानेवाला है।

فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّ لَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾ ؕ

29. सो (ऐ ह़बीबे मुकर्रम!) आप नसीह़त फ़रमाते रहें पस आप अपने रब के फ़ज़्लो करम से न तो काहिन (या'नी जिन्नात के ज़रीए़ खबरें देनेवाले) हैं और न दीवाने।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾

30. क्या (कुफ़्फ़ार) केहते हैं (येह) शाइर हैं हम इनके ह़कमें ह़वादिसे ज़माना का इन्तिज़ार कर रहे हैं।

قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾ ؕ

31. फ़रमा दीजिए : तुम (भी) मुन्तज़िर रहो और मैं भी तुम्हारे साथ (तुम्हारी हलाकत का) इन्तिज़ार करनेवालों में हूं।

اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ ۚ

32. क्या उन की अ़क़्लें उन्हें येह (बे अ़क़्ली की बातें) सुझाती हैं या वोह सरकशो बाग़ी लोग हैं।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ ۚ

33. या वोह केहते हैं कि इस (रसूल)ने इस (क़ुरआन) को अज़ ख़ुद घड़ लिया है, (ऐसा नहीं) बल्कि वोह (हक़ को) मानते ही नहीं हैं।

فَلْيَأْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾

34. पस उन्हें चाहिए कि इस (क़ुरआन) जैसा कोई कलाम ले आएं अगर वोह सच्चे हैं।

اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. क्या वोह किसी शय के बिग़ैर ही पैदा कर दिए गए हैं या वोह ख़ुद ही ख़ालिक़ हैं।

اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. या उन्हों ने ही आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है, (ऐसा नहीं) बल्कि वोह (हक़ बात पर) यक़ीन ही नहीं रखते।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. या उनके पास आपके रबके ख़ज़ाने हैं या वोह उन पर निगरां (और) दारोग़े हैं।

اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾

38. या उनके पास कोई सीढ़ी है (जिस पर चढ़ कर) वोह उस (आस्मान)में कान लगा कर बातें सुन लेते हैं? सो जो उन में से सुननेवाला है उसे चाहिए कि रौशन दलील लाए।

اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. क्या उस (ख़ुदा) के लिए बेटियां हैं और तुम्हारे लिए बेटे हैं?

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٠﴾

40. क्या आप उन से कोई उजरत तलब फ़रमाते हैं कि वोह तावान के बोझ से दबे जा रहे हैं?

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤١﴾

41. क्या उनके पास ग़ैब (का इल्म) है कि वोह लिख लेते हैं?

اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۭ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. क्या वोह (आप से) कोई चाल चलना चाहते हैं? तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया है वोह ख़ुद ही अपने दामे फ़रेब में फंसे जा रहे हैं।

اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. क्या अल्लाह के सिवा उनका कोई मा'बूद है? अल्लाह हर उस चीज़ से पाक है जिसे वोह (अल्लाह का) शरीक ठेहराते हैं।

وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا

44. और अगर वोह आस्मान से कोई टुकड़ा (अपने

يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾

ऊपर) गिरता हुवा देख लें तो (तब भी येह) कहेंगे कि तेह ब तेह (गेहरा) बादल है।

فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. सो आप उनको (उनके ह़ाल पर)छोड़ दीजिए यहां तक कि वोह अपने उस दिन से आ मिलें जिसमें वोह हलाक कर दिए जाएंगे।

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾

46. जिस दिन न उनका मक्रो फ़रेब उनके कुछ काम आएगा और न ही उनकी मदद की जाएगी।

وَ اِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. और बेशक जो लोग ज़ुल्म कर रहे हैं उनके लिए इस अज़ाब के अलावा वोह भी अ़ज़ाब है, लेकिन उनमें से अक्सर लोग जानते नहीं हैं.

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾

48. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) इनकी बातों से ग़म ज़दा न हों) आप अपने रब के हुक्म की ख़ातिर सब्र जारी रखिए बेशक आप (हर वक़्त) हमारी आंखों के सामने (रेहते) हैं ★ और आप अपने रब की ह़म्द के साथ तस्बीह़ कीजिए जब भी आप खड़े हों।

وَ مِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَ اِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾ ع

49. और रात के अवक़ात में भी उसकी तस्बीह़ कीजिये और (पिछ्ली रात भी) जब सितारे छुपते हैं।

आयातुहा 62 | 53 सूरतुन नज्मि मक्कियतुन 23 | रुकूआ़तुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ﴿١﴾

1. क़सम है रौशन सितारे मुहम्मद(ﷺ) की जब वोह (चश्मे ज़दन में शबे मे'राज ऊपर जा कर) नीचे उतरे।

★ अगर इन ज़ालिमोंने निगाहें फेर ली हैं तो क्या हुआ हम तो आप की तरफ़ से निगाहें हटाते ही नहीं हैं और हम हर वक़्त आप ही को तक्ते रहते हैं।

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۚ ﴿٢﴾

2. तुम्हें (अपनी) सोहबत से नवाज़नेवाले (या'नी तुम्हें अपने फ़ैज़े सोहबत से सहाबी बनानेवाले रसूल ﷺ) न (कभी) राह भूले और न (कभी) राह से भटके।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ﴿٣﴾ ط

3. और वोह (अपनी) ख़्वाहिश से कलाम नहीं करते।

اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ﴿٤﴾ لا

4. उनका इर्शाद सरासर वही होती है जो उन्हें की जाती है।

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾ لا

5. उनको बड़ी कुव्वतों वाले (रब)ने (बराहे रास्त) इल्मे (कामिल) से नवाज़ा।

ذُوْ مِرَّةٍ ط فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾ لا

6. जो हुस्ने मुत्लक़ है, फिर उस (जलवए हुस्न)ने (अपने) ज़हूर का इरादा फ़रमाया।

وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ﴿٧﴾ ط

7. और वोह (मुहम्मद ﷺ शबे मे'राज आ़लमे मकां के) सब से ऊंचे किनारे पर थे (या'नी आ़लमे ख़ल्क़ की इन्तिहा पर थे)।

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿٨﴾ لا

8. फिर वोह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने ह़बीब मुह़म्मद ﷺ से) क़रीब हुवा फिर और ज़ियादा क़रीब हुआ हो गया।

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ﴿٩﴾ ج

9. फिर (जलवए ह़क़और ह़बीबे मुकर्रम ﷺ में सिर्फ़) दो कमानों की मिक़्दार फ़ासला रेह गया या इन्तिहाए क़ुर्ब में) उससे भी कम हो गया।

فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ﴿١٠﴾ ط

10. पस (उस खास मकामे क़ुर्बो विसाल पर) उस (अल्लाह)ने अपने अ़ब्दे (महबूब) की तरफ़ वही फ़रमाई जो (भी) वही फ़रमाई।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿١١﴾

11. (उन के) दिल ने उसके ख़िलाफ़ नहीं जाना जो (उनकी) आंखों ने देखा।

★ येह मा'ना इमाम बुख़ारीने ह़ज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अ़न्हु से अल जामिउ़स सह़ीह़ में रिवायत किया है, मज़ीद ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, इमाम ह़सन बसरी, इमाम जा'फ़र अस्सादिक़, मुह़म्मद बिन का'ब अल करज़ी अत्ताबेई, ज़ह्हाक रदियल्लाहु अन्हुम और दीगर कई अइम्मए तफ़्सीर का क़ौल भी येही है।

اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾

12 .क्या तुम उनसे इस पर झगड़ते हो कि जो उन्हों ने देखा।

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾ۙ

13. और बेशक उन्होंने तो उस (जल्वए ह़क़)को दूसरी मर्तबा (फिर) देखा (और तुम एक बार देखने पर ही झगड़ रहे हो)।★

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾

14. सिदरतुल मुन्तहा के क़रीब।

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾ؕ

15 . उसी के पास जन्नतुल मा'वा है।

اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾ۙ

16. जब नूरे ह़क़ की तजल्लियात सिद्र (तुल-मुन्तहा) को (भी) ढांप रही थीं जो के (उस पर) साया फिगन थीं। ★

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾

17. और उनकी आंख न किसी और तरफ़ माइल हुई और न हद से बढ़ी जिसको (तकना था उसी पर जमी रही)।

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾

18. बेशक उन्हों ने (मे'राज की शब) अपने रब की बड़ी निशानियां देखीं।

اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾ۙ

19. क्या तुमने लात और उज़्ज़ा (देवियों) पर ग़ौर किया है ?

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾

20. और उस तीसरी एक और (देवी) मनात को भी (ग़ौर से देखा है? तुम्ने उन्हें अल्लाह की बेटियां बना रख्खा है ?)

اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾

21. (ऐ मुशरिको !) क्या तुम्हारे लिये बेटे हैं और उस (अल्लाह) के लिए बेटियां हैं ?

تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾

22. (अगर तुम्हारा तसव्वुर दुरुस्त है) तब तो येह तक़्सीम बड़ी ना इन्साफी है।

اِنْ هِىَ اِلَّاۤ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ

23. मगर (ह़क़ीक़त येह है कि) वोह (बुत) महज़ नाम

★.येह मा'ना इब्ने अ़ब्बास, अबू ज़र ग़िफ़ारी, इकरमह अत्ताबई, ह़सन अल बसरी अत्ताबई, मुह़म्मद बिन का'ब अल क़ुर्ज़ी अत्ताबई, अबुल आ़लिया अर्रियाही अत्ताबई, अ़ता बिन अबी रबाह़ अत्ताबई, कअ़बुल अह़्बार अत्ताबई, इमाम अह़्मद बिन ह़ंबल और इमाम अबुल ह़सन अ़श्अ़री रदियल्लाहु अ़न्हुम और दीगर अइम्मा के अक़्वाल पर है।]

★.येह मा'ना भी इमाम ह़सन अल बसरी रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु और दीगर अइम्मा के अक़्वाल पर है।]

أَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ ؕ

ही नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बापदादा ने रख लिए हैं। अल्लाहने उनकी निस्बत कोई दलील नहीं उतारी, वोह लोग महज़ वह्मो-गुमान की और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी कर रहे हैं हालांकि उनके पास उनके रब की तरफ़ से हिदायत आ चुकी है।

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾ ۖ

24. किया इन्सान के लिए वोह (सब कुछ) मुयस्सर है जिसकी वोह तमन्ना करता है?

فَلِلّٰهِ الْآخِرَةُ وَالْأُوْلٰى ﴿٢٥﴾ ع ١ ٢٥ ٥

25. पस आख़िरत और दुनिया का मालिक तो अल्लाह ही है।

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَّأْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾

26.और आस्मानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं (कि कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन उनकी इबादत करते और उनसे शफ़ाअ़त की उम्मीद रखते हैं) जिनकी शफ़ाअ़त कुछ काम नहीं आएगी मगर उसके बा'द कि अल्लाह जिसे चाहता है और पसंद फ़रमाता है उसके लिये इज़्न (जारी) फ़रमा देता है।

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثٰى ﴿٢٧﴾

27. बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वोह फ़रिश्तों को औ़रतों के नाम से मौसूम कर देते है।

وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ؕ إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ ۚ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ﴿٢٨﴾ ۚ

28. और उन्हें इसका कुछ भी इल्म नहीं है, वोह सिर्फ़ गुमान के पीछे चलते हैं, और बेशक गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में किसी काम नहीं आता।

فَأَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ؕ

29. सो आप अपनी तवज्जोह उस से हटा लें जो हमारी याद से रू गर्दानी करता है और सिवाए दुन्यवी ज़िन्दगी के और कोई मक़्सद नहीं रखता।

ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ إِنَّ رَبَّكَ

30. उन लोगों के इल्म की रसाई की येही हद है, बेशक

هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَ
هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿۳۰﴾

आपका रब उस शख़्स को (भी) ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटक गया है और उस शख़्स को (भी) खूब जानता है जिसने हिदायत पा ली है।

وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي
الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا
بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا
بِالْحُسْنٰى ﴿۳۱﴾ ۚ

31. और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है ताकि जिन लोगों ने बुराइयां कीं उन्हें उनके आ'माल का बदला दे और जिन लोगों ने नेकियां कीं उन्हें अच्छा अज्र अ़ता फ़रमाए।

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ
وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ
اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ اِذْ اَنْتُمْ
اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا
تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ
اتَّقٰى ﴿۳۲﴾ ع

32. जो लोग छोटे गुनाहोंऔर (लग़ज़िशों) के सिवा बड़े गुनाहों और बे हयाई के कामों से परहेज़ करते हैं बेशक आपका रब बख़्शिश की बड़ी गुंजाइश रखनेवाला है, वोह तुम्हें ख़ूब जानता है जब उसने तुम्हारी ज़िन्दगी इब्तिदा और नश्वो नुमा ज़मीन (या'नी मिट्टी) से की थी और जबकि जुम अपनी माओं के पेटमें जनीन (या'नी हमल) की सूरत में थे, पस तुम अपने आपको बड़ा पाको साफ़ मत जताया करो वोह ख़ूब जानता है कि (अस्ल) परहेज़गार कौन है।

اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿۳۳﴾ ۙ

33 कया आपने उस शख़्स को देखा जिसने (हक़ से) मुंह फेर लिया ?

وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّ اَكْدٰى ﴿۳۴﴾

34. और उसने (राहे हक़ में) थोड़ा सा (माल) दिया और (फिर हाथ) रोक लिया।

اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿۳۵﴾

35. क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है कि वोह देख रहा है ?

اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ صُحُفِ
مُوْسٰى ﴿۳۶﴾ ۙ

36. क्या उसे उन (बातों) की ख़बर नहीं दी गई जो मूसा (عليه السلام) के सहीफ़ों में (मज़कूर)थीं ?

وَ اِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ﴿۳۷﴾ ۙ

37. और इब्राहीम (عليه السلام) के (सहीफ़ों में थीं) जिन्हों ने (अल्लाह के हर अम्रको) ब-तमामो कमाल पूरा किया।

اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿٣٨﴾

38. कि कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरेके गुनाहों. का बोझ नहीं उठाएगा।

وَ اَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾

39. और येह कि इन्सानको (अ़द्ल में) वोही कुछ मिलेगा जिसकी उसने कोशिश की होगी (रहा फ़ज़्ल उस पर किसी का ह़क़ नहीं वोह महज़ अल्लाह की अ़ता-व-रज़ा है जिस पर जितना चाहे कर दे)।

وَ اَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿٤٠﴾

40. और येह कि उसकी हर कोशिश अ़न क़रीब दिखा दी जाएगी (या'नी ज़ाहिर कर दी जाएगी)।

ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿٤١﴾

41. फिर उसे (उसकी हर कोशिश का) पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।

وَ اَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾

42. और येह कि (बिल आख़िर सबको) आप के रब ही की तरफ़ पहुंचना है।

وَ اَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَ اَبْكٰى ﴿٤٣﴾

43. और येह कि वोही (खुशी दे कर) हंसाता है और (ग़म दे कर) रुलाता है।

وَ اَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَ اَحْيَا ﴿٤٤﴾

44. और येह कि वोही मारता है और जिलाता है।

وَ اَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَ الْاُنْثٰى ﴿٤٥﴾

45. और येह कि उसीने नर और मादह दो क़िस्मों को पैदा किया।

مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ﴿٤٦﴾

46. नुत्फ़े (एक तौलीदी क़त्रह) से जबकि वोह (रह़्मे मादा में) टपकाया जाता है।

وَ اَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿٤٧﴾

47. और येह कि (मरने के बाद) दोबारा ज़िन्दा करना (भी) उसी पर है।

وَ اَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَ اَقْنٰى ﴿٤٨﴾

48. और येह कि वोही (बक़द्रे ज़रूरत दे कर) ग़नी कर देता है और वोही (ज़रूरत से ज़ाइद दे कर) खज़ाने भर देता है।

وَ اَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿٤٩﴾

49. और येह कि वोही शि'रा (सितारे) का रब है (जिसकी दौरे जाहिलिय्यत में पूजा की जाती थी)।

وَاَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَاۨ الْاُوْلٰى ۙ﴿۵۰﴾

50. और येह कि उसीने पेहली (क़ौमे) आ़द को हलाक किया।

وَثَمُوْدَاۡ فَمَاۤ اَبْقٰى ۙ﴿۵۱﴾

51. और (क़ौमे) समूद को (भी) फिर (उनमें से किसी को) बाक़ी न छोड़ा।

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا
هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ؕ﴿۵۲﴾

52. और उससे पहले क़ौमे नूह़ को (भी हलाक किया) बेशक वोह बड़े ही ज़ालिम और बड़े ही सरकश थे।

وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ۙ﴿۵۳﴾

43. और (क़ौमे लूत की) उल्टी हुई बस्तियों को (ऊपर उठा कर) उसीने नीचे दे पटका।

فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۚ﴿۵۴﴾

54. पस उनको ढांप लिया जिसने ढांप लिया (या'नी फिर उन पर पथ्थरों की बारिश कर दी गई)।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿۵۵﴾

55. सो ऐ इन्सान ! तू अपने परवरदिगार की किन किन ने'मतों में शक करेगा।

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿۵۶﴾

56. येह (रसूले अकरम ﷺ भी) अगले डर सुनाने वालों में से एक डर सुनानेवाले हैं।

اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۚ﴿۵۷﴾

57. आने वाली (क़ियामत की घड़ी) क़रीब आ पहुंची।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ؕ﴿۵۸﴾

58. अल्लाह के सिवा इसे कोई ज़ाहिर (और क़ाइम) करनेवाला नहीं है।

اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ۙ﴿۵۹﴾
وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ۙ﴿۶۰﴾

59. पस क्या इस कलाम से तअ़ज्जुब करते हो।
60. और तुम हंसते हो और रोते नहीं हो।

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿۶۱﴾

61. और तुम (गफ़्लत के) खेल में पड़े हो।

السجدة
فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿۶۲﴾ ع ۳ السجدة

62. सो अल्लाह के लिये सजदह करो और (उसकी) इ़बादत करो।

आयातुहा 55 | 54 सूरतुल क़-मरि मक्किय्यतुन 37 | रुकूआ़तुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾

1.क़ियामत क़रीब आ पहुंची और चांद दो टुकड़े हो गया।

وَ اِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَ يَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾

2.और अगर वोह (कुफ़्फ़ार) कोई निशानी (या'नी मो'जिज़ा) देखते हैं तो मुंह फेर लेते हैं और केहते हैं कि (येह तो) हमेशा से चला आनेवाला ताक़तवर जादू है।

وَ كَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَ كُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾

3. और उन्होंने (अब भी) झुटलाया और अपनी ख़्वाहिशात के पीछे चले और हर काम (जिसका वा'दा किया गया है) मुकर्ररह वक़्त पर होनेवाला है।

وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۙ﴿٤﴾

4. और बेशक उनके पास (पहली क़ौमों की) ऐसी ख़बरें आ चुकी हैं जिनमें (कुफ़्रो ना फरमानी पर) इ़ब्रतो सर ज़निश है।

حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۙ﴿٥﴾

5. (येह क़ुरआन) कामिल दानाई व हिक्मत है क्या फिर भी डर सुनानेवाले कुछ फ़ाइदा नहीं देते ?

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۙ﴿٦﴾

6. सो आप उनसे मुंह फेर लें, जिस दिन बुलानेवाला (फ़रिश्ता) एक निहायत ना गवार चीज़ (मैदाने हश्र) की तरफ़ बुलाएगा।

وقف لازم

خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۙ﴿٧﴾

7. अपनी आंखें झुकाए हुए क़ब्रों से निकल पडेंगे गोया वोह फैली हुई टिड्डियां हैं।

مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾

8. पुकारनेवाले की तरफ़ दौड़ कर जा रहे होंगे, कुफ़्फ़ार केहते होंगे येह बड़ा सख़्त दिन है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا

9. इनसे पहले क़ौमे नूहने (भी) झुटलाया था। सो उन्होंने

عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ۝٩

हमारे बन्दए (मुर्सल नूह़) عليه السلام की तक्ज़ीब की और कहा : (येह) दीवाना है और उन्हें धम्कियां दी गईं।

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّیْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝١٠

10. सो उन्होंने अपने रब से दुआ़ की कि मैं (अपनी क़ौम के मज़ालिम से) आ़जिज़ हूं पस तू इन्तिक़ाम ले।

فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١١

11. फिर हमने मूस्ला धार बारिश के साथ आस्मान के दरवाज़े खोल दिए।

وَّ فَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُیُوْنًا فَالْتَقَی الْمَآءُ عَلٰۤی اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٢

12. और हमने ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, सो (ज़मीनो आस्मान का) पानी एक ही काम के लिये जमा' हो गया जो (उनकी हलाकत के लिये) पहले से मुक़र्रर हो चुका था।

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰی ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّ دُسُرٍ ۝١٣

13. और हमने उनको (या'नी नूह़ عليه السلام को) तख़्तों और मेखोंवाली (कश्ती) पर सवार कर लिया।

تَجْرِیْ بِاَعْیُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝١٤

14. जो हमारी निगाहों के सामने (हमारी हिफ़ाज़त में) चलती थी, (येह सब कुछ) उस (एक) शख़्स (नूह़ عليه السلام) का बदला लेने की ख़ातिर था जिससे इन्कार किया गया था।

وَ لَقَدْ تَّرَكْنٰهَاۤ اٰیَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٥

15. और बेशक हमने इस (तूफ़ाने नूह़ के आसार) को निशानी के तौर पर बाक़ी रख्खा तो क्या कोई सोचने (और नसीह़त क़ुबूल करने) वाला है?

فَكَیْفَ كَانَ عَذَابِیْ وَ نُذُرِ ۝١٦

16. सो मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा था।

وَ لَقَدْ یَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٧

17. और बेशक हमने क़ुरआन को नसीह़त के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई नसीह़त क़ुबूल करनेवाला है?

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَیْفَ كَانَ عَذَابِیْ وَ نُذُرِ ۝١٨

18. (क़ौमे) आ़दने भी (पयग़म्बरों को) झुटलाया था सो (उन पर) मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा (इ़ब्रतनाक) रहा।

اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَیْهِمْ رِیْحًا صَرْصَرًا فِیْ یَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۝١٩

19. बेशक हमने उन पर निहायत सख़्त आवाज़वाली

तेज़ आंधी (उनके ह़क़ में) दाइमी नहूसत के दिनमें भेजी।

تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾

20. जो लोगों को (इस तरह़) उखाड़ फेंकती थी गोया वोह उखड़े हुए खजूरों के दरख़्तों के तने हैं।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾

21. फिर मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा (इ़ब्रत नाक) रहा।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾ ع ١ ٢٢ ٨

22. और बेशक हमने क़ुरआन को नसीह़त के लिए आसान कर दिया है सो क्या कोई नसीह़त हासिल करनेवाला है?

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾

23. (क़ौमे) समूदने भी डर सुनानेवाले पयगम्बरों को झुटलाया।

فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

24. पस वोह केहने लगे : क्या एक बशर जो हम ही में से है, हम उसकी पैरवी करें, तब तो हम यक़ीनन गुमराही और दीवानगी में होंगे।

ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾

25. क्या हम सब में से इसी पर नसीह़त (या'नी वह़ी) उतारी गई है ? बल्कि वोह बड़ा झूटा ख़ुद पसंद (और मु-त-कब्बिर) है।

سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾

26. उन्हें कल (क़ियामत के दिन) ही मा'लूम हो जाएगा कि कौन बड़ा झूटा, ख़ुद पसंद (और मु-त-कब्बिर) है।

اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾

27. बेशक हम उनकी आज़माइश के लिए ऊंटनी भेजनेवाले हैं पस (अय सॉलेह !) उन (के अंजाम) का इन्तिज़ार करें और सब्र जारी रख्खें।

وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾

28. उन्हें इस बात से आगाह कर दें कि उनके (और ऊंटनी के) दरमियान पानी तक़्सीम कर दिया गया है, हर एक (को) पानी का हिस्सा उसकी बारी पर ह़ाज़िर किया जाएगा।

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

29.पस उन्होंने (क़दार नामी) अपने एक साथीको बुलाया, उसने (ऊंटनी पर तल्वार से) वार किया और कौंचें काट दीं।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾

30. फिर मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा (इ़ब्रत नाक)

हुआ।

إِنَّآ أَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ صَيۡحَةٗ وَٰحِدَةٗ فَكَانُواْ كَهَشِيمِ ٱلۡمُحۡتَظِرِ ٣١

31. बेशक हमने उन पर एक निहायत ख़ौफ़नाक आवाज़ भेजी सो वोह बाड़ लगानेवाले के बचे हुए और रौंदे गए भूसे की तरह हो गए।

وَلَقَدۡ يَسَّرۡنَا ٱلۡقُرۡءَانَ لِلذِّكۡرِ فَهَلۡ مِن مُّدَّكِرٖ ٣٢

32. और बेशक हमने क़ुरआन नसीह़त के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई नसीह़त ह़ासिल करनेवाला है?

كَذَّبَتۡ قَوۡمُ لُوطِۭ بِٱلنُّذُرِ ٣٣

33. क़ौमे लूत ने भी डर सुनानेवालों को झुटलाया।

إِنَّآ أَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ حَاصِبًا إِلَّآ ءَالَ لُوطٖۖ نَّجَّيۡنَٰهُم بِسَحَرٖ ٣٤

34. बेशक हमने उन पर कंकरियां बरसानेवाली आंधी भेजी सिवाए औलादे लूत (عليه السلام) के, हमने उन्हें पिछली (रातअज़ाब से) बचा लिया.

نِّعۡمَةٗ مِّنۡ عِندِنَاۚ كَذَٰلِكَ نَجۡزِي مَن شَكَرَ ٣٥

35.अपनी तरफ़ से ख़ास इन्आ़म के साथ, इसी तरह़ हम उस शख़्स को जज़ा दिया करते हैं जो शुक्र गज़ार होता है।

وَلَقَدۡ أَنذَرَهُم بَطۡشَتَنَا فَتَمَارَوۡاْ بِٱلنُّذُرِ ٣٦

36. और बेशक लूत(عليه السلام) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया था फिर उन लोगोंने उनके डराने में शक करते हुए झुटलाया।

وَلَقَدۡ رَٰوَدُوهُ عَن ضَيۡفِهِۦ فَطَمَسۡنَآ أَعۡيُنَهُمۡ فَذُوقُواْ عَذَابِي وَنُذُرِ ٣٧

37. और बेशक उन लोगोंने लूत (عليه السلام) से उनके मेहमानों को छीन लेने का इरादा किया सो हमने उनकी आंखों की साख़्त मिटा कर उन्हें बे नूर कर दिया, फिर (उनसे कहा:) मेरे अज़ाब और डरानेका मज़ा चखो।

وَلَقَدۡ صَبَّحَهُم بُكۡرَةً عَذَابٞ مُّسۡتَقِرّٞ ٣٨

38. और बेशक उन पर सुब्ह़ सवेरे ही हमेशा क़ाइम रेहनेवाला अज़ाब आ पहुंचा।

فَذُوقُواْ عَذَابِي وَنُذُرِ ٣٩

39. फिर (उनसे कहा गया) मेरे अज़ाब और डराने का मज़ा चखो।

وَلَقَدۡ يَسَّرۡنَا ٱلۡقُرۡءَانَ لِلذِّكۡرِ فَهَلۡ مِن مُّدَّكِرٖ ٤٠

40. और बेशक हमने क़ुरआन को नसीह़त के लिये आसान कर दिया है तो क्या कोई नसीह़त ह़ासिल करनेवाला है?

ع ٢ ١٨ ٩

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾

41. और बेशक क़ौमे फ़िरऔन के पास (भी) डर सुनाने वाले आए।

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

42. उन्होंने हमारी सब निशानियों को झुटला दिया बडे ग़ालिब बड़ी क़ुदरतवाले की पकड़ की शान के मुताबिक़ पकड़ लिया।

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾

43. (ऐ क़ुरैशे मक्का!) क्या तुम्हारे काफ़िर उन (अगले) लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिये (आस्मानी) किताबोंमें नजात लिख्खी हुई है?

اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

44. या येह (क़ुफ़्फ़ार) केहते हैं कि हम (नबिय्ये मुकर्रम ﷺ पर) ग़ालिब रेहने वाली मज़बूत जमाअ़त हैं।

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

45. अ़न क़रीब येह जथ्था (मैदाने बद्र में) शिकस्त खाएगा और येह लोग पीठ फेर कर भाग जाएंगे)

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾

46. बल्कि उनका (अस्ल) वा'दा तो क़ियामत है और क़ियामत की घड़ी बहुत ही सख़्त और बहुत ही तल्ख़ है।

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ وقفلازم

47. बेशक मुज्रिम लोग गुमराही और दीवानगी (या आग की लपेट) में हैं।

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾

48. जिस दिन वोह लोग अपने मुंह के बल दोज़ख़ में घसीटे जाएंगे (तो उनसे कहा जाएगा) आग में जलने का मज़ा चखो.

اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾

49. बेशक हमने हर चीज़ को एक मुक़र्ररह अंदाज़े के मुताबिक बनाया है।

وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾

50. और हमारा हुक्म तो फ़क़त यक बारगी वाक़े' हो जाता है जैसे आंख का झपकना है।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ

51. और बेशक हमने तुम्हारे (बहुत से) गिरोहों को हलाक कर डाला, सो क्या कोई नसीहत हासिल करने

مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾

वाला है ?

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

52. और जो कुछ (भी) उन्हों ने किया आ'मालनामों में दर्ज है।

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾

53. और हर छोटा और बड़ा (अ़मल) लिख दिया गाया है।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾

54. बेशक परहेज़गार जन्नतों और नेहरों में (लुत्फ़ अंदोज़) होंगे।

فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾ ع

55. पाकीज़ा मजालिस में (ह़क़ीक़ी) इक़्तिदार के मालिक बादशाह की ख़ास क़ुर्बत में (बैठते) होंगे।

रुकूआ़तुहा 3 | 55 सूरतुर रह़्मानि मक्कियय्तुन 97 | आयातुहा 78

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

الرَّحْمَٰنُ ﴿١﴾

1. (वोह) रह़्मान ही है।

عَلَّمَ الْقُرْآنَ ﴿٢﴾

2. जिसने (खुद रसूले अ़रबी ﷺ को) क़ुरआन सिखाया।★

خَلَقَ الْإِنسَانَ ﴿٣﴾

3. उसीने (इस कामिल)इन्सान को पैदा फ़रमाया.

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾

4. उसी ने इसे (या'नी नबिय्ये बर ह़क़ ﷺ को मा का-न वमा यकूनु का) बयान सिखाया।★

★ कुफ़्फ़ारो मुशरिकीने मक्का केइस इल्ज़ाम के जवाबमें येह आयत उतरी कि मुहम्मद ﷺ को मआ़ज़ल्लाह. कोई शख़्स खुफया क़ुर्आन सिखाता है।

हवाला जात केलिये मुलाहिज़ा करें तफ़्सीरे बग़वी, ख़ाज़िन, अल क़ुशैरी, अल बह़्रुल मुह़ीत, जुमल, फ़त्हुल क़दीर, अल मज़्हरी, अल लुबाब, सावी, अस सिराजुल मुनीर, मरागी, अज़्वाउल बयान और मजमउ़ल बयान वग़ैरहुम।

★ मुफ़स्सिरीने किरामने बयान का " अल्ल-म मा'ना मा का-न वमा यकूनु " भी बयान किया है।

हवाला जात केलिये मुलाहिज़ा करें तफ्सीरे बग़वी, खाज़िन, जुमल, अल मज़्हरी, अल लुबाब, ज़ादुल मसीर, सावी, अस सिराजुल मुनीर और मज्मउ़ल बयान।

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝٥

5. सूरज और चाँद (उसी के) मुकर्ररह हिसाब से चल रहे हैं।

وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝٦

6. और ज़मीन पर फैलने वाली बूटियां और सब दरख़्त (उसी को) सजदह कर रहे हैं।

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۝٧ۙ

7. और उसीने आस्मान को बुलंद कर रखखा है और (उसीने अद्ल के लिये) तराजू क़ाइम कर रखखी है।

اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ۝٨

8. ताकि तुम तौलने में बे ए'तेदाली न करो।

وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝٩

9. और इन्साफ़ के साथ वज़न को ठीक रखखो और तौल को कम न करो।

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝١٠ۙ

10. ज़मीन को उसी ने मख्लूक के लिये बिछा दिया।

فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝١١ۖ

11. उसमें मेवे हैं और खूशों वाली खजूरें हैं।

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝١٢ۚ

12. और भूसेवाला अनाज है और खुशबू दार (फल) फूल हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٣

13. पस (ऐ गिरोहे जिन्नो इन्सान)तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे ?

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝١٤ۙ

14. उसीने इन्सान को ठीकरी की तरह बजते हुए खुश्क गारे से बनाया।

وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝١٥ۚ

15. और जिन्नात को आग के शो'ले से पैदा किया।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝١٦

16. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे ?

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝١٧ۚ

17. (वोही). दोनों मशरिकों का मालिक है और (वोही) दोनों मग्रिबों का मालिक है।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۸﴾

18. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

مَرَجَ الْبَحْرَیْنِ یَلْتَقِیٰنِ ﴿۱۹﴾ۙ

19. उसीने दो समंदर रवां किए जो बाहम मिल जाते हैं.

بَیْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا یَبْغِیٰنِ ﴿۲۰﴾ۚ

20. उन दोनों के दरमियान एक आड़ है वोह (अपनी अपनी) हद से तजावुज़ नहीं कर सक्ते।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۱﴾

21. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

یَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿۲۲﴾ۚ

22. उन दोनों (समंदरों) से मोती (जिसकी झलक सब्ज़ होती है) और मरजान (जिसकी रंगत सुर्ख़ होती है) निकलते हैं.

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۳﴾

23. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَـَٔاتُ فِی الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿۲۴﴾ۚ

24. और बुलंद बादबान वाले बड़े बड़े जहाज़ (भी) उसीके (इख़्तियार में) हैं जो पहाड़ों की तरह समंदर में (खड़े होते या चलते) हैं।

النصف

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۵﴾ع

25. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

كُلُّ مَنْ عَلَیْهَا فَانٍ ﴿۲۶﴾ۖۚ

26. हर कोई जो भी ज़मीन पर है फना हो जाने वाला है.

وَّیَبْقٰی وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿۲۷﴾ۚ

27. और आपके रब ही की ज़ात बाकी रहेगी जो साहिबे अज़मतो जलाल और साहिबे इन्आमो इकराम है.

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۸﴾

28. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

یَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلَّ یَوْمٍ هُوَ فِیْ شَاْنٍ ﴿۲۹﴾ۚ

29. सब उसी से मांगते हैं जो भी आस्मानों और ज़मीन में हैं, वोह हर आन नई शानमें होता है.

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۰﴾

30. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَیُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿۳۱﴾ۚ

31. ऐ हर दो गिरोहाने (इन्सो जिन्न) हम अ़नक़रीब तुम्हारे हि़साब की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं.

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۲﴾

32. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اِنِ
اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ
لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿۳۳﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۴﴾

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ
نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿۳۵﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۶﴾
فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ﴿۳۷﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۸﴾
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ
اِنْسٌ وَّ لَا جَآنٌّ ﴿۳۹﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۰﴾
يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ
بِالنَّوَاصِيْ وَ الْاَقْدَامِ ﴿۴۱﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۲﴾
هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا
الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۴۳﴾

33. अय गिरोहे जिन्नो इन्स ! अगर तुम इस बात पर कुदरत रखते हो के आस्मानों और ज़मीन के किनारों से बाहर निकल सको (और तस्ख़ीरे काइनात करो) तो तुम निकल जाओ, तुम जिस (कुर्रए समावी के) मक़ाम पर भी निकल जाओगे वहां भी उसी की सल्तनत होगी.

34. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

35. तुम दोनों पर आग के खालिस शो'ले भेज दिए जाएंगे और (बिगैर शो'लों के) धुँवां (भी भेजा जाएगा) और तुम दोनों उनसे बच न सकोगे.

36. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

37. फिर जब आस्मान फट जाएंगे और जले हुए तेल (या सुर्ख़ चमड़े) की तरह गुलाबी हो जाएंगे.

38. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

39. सो उस दिन न तो किसी इन्सान से उसके गुनाह की बाबत पूछा जाएगा और न ही किसी जिन्न से.

40. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

41. मुजरिम लोग अपने चेहरों की सियाही से पेहचान लिये जाएंगे पस उन्हें पेशानी के बालों और पांव से पकड़ कर खींचा जाएगा।

42. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

43. (उनसे कहा जाएगा) येही है वोह दोज़ख़ जिसे मुजरिम लोग झुटलाया करते थे।

وقف لازم

يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾

44. वोह उस (दोज़ख़) में और खौलते गरम पानीमें घूमते फिरेंगे.

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾

45. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾

46. और जो शख़्स अपने रबके हुज़ूर (पेशी के लिये) खड़ा होने से डरता है उसके लिये दो जन्नतें हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾

47. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾

48. जो दोनों (सर सब्ज़ो शादाब) घनी शाखों वाली (जन्नतें) हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾

49. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾

50. उन दोनों में दो चश्में बेह रहे हैं।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾

51. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾

52. उन दोनों में हर फल (और मेवे) की दो दो किस्में हैं.

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾

53. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾

54. अहले जन्नत ऐसे बिस्तरों पर तकिये लगाए बैठे होंगे जिनके अस्तर नफ़ीस और दबीज़ रेशम (या'नी अत्लस) के होंगे, और दोनों जन्नतों के फल (उनके) क़रीब झुक रहें होंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾

55 .पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओग?

فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾

56.और उनमें नीची निगाह रखने वाली (हूरे) होंगी जिन्हें पहले न किसी इन्सानने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾

57. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे. ?

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

58. गोया वोह (हूरें) याक़ूत और मरजान हैं।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۹﴾

59. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿۶۰﴾

60. नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ नहीं है।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۱﴾

61. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿۶۲﴾

62.और (उनके लिये)इन दो के सिवा दो और बहिश्तें भी हैं।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۳﴾

63. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿۶۴﴾

64.वोह दोनों गेहरी सब्ज़ रंगतमें सियाही माइल लगती हैं।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۵﴾

65. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فِیْهِمَا عَیْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿۶۶﴾

66. उन दोनों मे (भी) दो चश्में में हैं जो खूब छलक रहें होंगे।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۷﴾

67. पस तुम दोनों अपने रब की किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فِیْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿۶۸﴾

68. उन दोनों में (भी) फल और खजूरें और अनार हैं.

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۹﴾

69. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

فِیْهِنَّ خَیْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿۷۰﴾

70. इन में (भी) खूब सीरतो खूबसूरत (हूरें) हैं।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۱﴾

71. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे ?

حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِی الْخِیَامِ ﴿۷۲﴾

72. ऐसी हूरें जो ख़ैमों में पर्दानशीन हैं।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۳﴾

73. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे ?

لَمْ یَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿۷۴﴾

74. उन्हें पहले न किसी इन्सान ही ने हाथ से छुवा है और न किसी जिन्नने।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۵﴾

75. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

مُتَّكِـِٕیْنَ عَلٰی رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِیٍّ

76. (अहले जन्नत) सब्ज़ क़ालीनों पर और नादिरो

حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

नफ़ीस बिछोनों पर तकिए लगाए (बैठ) होंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾

77. पस तुम दोनों अपने रबकी किन किन ने'मतों को झुटलाओगे?

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَ الْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

78. आपके रबका नाम बड़ी बरकत वाला है, जो साहिबे अज़मतो जलाल और साहिबे इन्आ़मो इकराम है।

ع ٣ ٣٣ ١٣

आयातुहा 96 | 56 सूरतुल वाक़िअ़ति मक्किय्यतुन 46 | रुकूआ़तुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾

1. जब वाक़े' होनेवाली (क़ियामत) वाक़े' हो जाएगी।

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾

2. उसके वाक़े' होनें में कोई झूट नहीं।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾

3. (वोह क़ियामत किसी को) नीचा कर देनेवाली (किसी को) ऊंचा कर देनेवाली (है)।

اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾

4. जब ज़मीन कपकपा कर शदीद लरज़ने लगेगी।

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾

5. और पहाड़ टूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे।

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ﴿٦﴾

6. फिर वोह ग़ुबार बन कर मुन्तशिर हो जाएंगे।

وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾

7. और तुम लोग तीन किस्मों में बट जाओगे।

فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾

8. सो (एक) दाएं जानिबवाले, दाएं जानिबवालों का क्या केहना।

وَ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿٩﴾

9. और (दूसरे) बाएं जानिबवाले, क्या (ही बुरे हालमें होंगे) बाएं जानिबवाले।

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ﴿١٠﴾

10. और (तीसरे), सब्क़त ले जानेवाले (येह) पेश क़दमी करनेवाले हैं।

اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿١١﴾

11. येही लोग (अल्लाह के) मुकर्रब होंगें।

وقفلازم

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾

12. ने'मतों के बाग़ात में (रहेंगे)

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾

13. (इन मुक़र्रबीन में) बड़ा गिरोह अगले लोगों में से होगा।

وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٤﴾

14. और पिछले लोगों में से (उनमे) थोड़े होंगे।

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿١٥﴾

15. (येह मुक़र्रबीन) ज़र निगार तख़्तों पर होंगे।

مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾

16. उन पर तकिए लगाए आमने सामने बैठे होंगे।

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ﴿١٧﴾

17. हमेशा एक ही ह़ालमें रेहनेवाले नौजवान ख़िदमतगार उन के इर्द गिर्द घूमते होंगे।

بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿١٨﴾

18. कूज़े, आफ़ताबे और चश्मों से बेहती हुई (शफ़्फ़ाफ़) शराबे (क़ुर्बत) के जाम ले कर (हाज़िरे ख़िदमत रहेंगे)।

لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿١٩﴾

19. उन्हें न तो उस (के पीने) से दर्दे सर की शिकायत होगी और न ही अ़क़्ल में फ़ुतूर (और बद मस्ती) आएगी।

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. और (जन्नती ख़िदमत गुज़ार) फल (और मेवे) ले कर (भी फिर रहे होंगे) जिन्हें वोह (मुक़र्रबीन) पसंद करेंगे।

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢١﴾

21. और परिंदों का गोश्त भी (दस्तयाब होगा) जिसकी वोह (अहले क़ुर्बत) ख़्वाहिश करेंगें।

وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٢﴾

22. और ख़ूबसूरत कुशादा आंखोंवाली हूरें भी (उनकी रिफ़ाक़त में होंगी)।

كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٣﴾

23. जैसे मह़फ़ूज़ छुपाए हुए मोती हों।

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. (येह) उन (नेक) आ'माल की जज़ा होगी जो वोह करते रहे थे।

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾

25. वोह इसमें न कोई बेहूदगी सुनेंगे और न कोई गुनाह की बात।

اِلَّا قِيۡلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾

26. मगर एक ही बात (कि येह सलामवाले हर तरफ से) सलाम ही सलाम सुनेंगे।

وَ اَصۡحٰبُ الۡيَمِيۡنِ ۙ۬ مَاۤ اَصۡحٰبُ الۡيَمِيۡنِ ﴿٢٧﴾

27. और दाएं जानिबवाले, क्या केहना दों जानिब वालों का।

فِیۡ سِدۡرٍ مَّخۡضُوۡدٍ ﴿٢٨﴾

28. और वोह बेकार बेरियोंमें।

وَّ طَلۡحٍ مَّنۡضُوۡدٍ ﴿٢٩﴾

29. और तेह ब तेह कीलों में।

وَّ ظِلٍّ مَّمۡدُوۡدٍ ﴿٣٠﴾

30 और लम्बे लम्बे (फैले हुए) सायों में।

وَّ مَآءٍ مَّسۡكُوۡبٍ ﴿٣١﴾

31. और बेहते छलक्ते पानियों में।

وَّ فَاكِهَةٍ كَثِيۡرَةٍ ﴿٣٢﴾

32. और ब-कसरत फलों और मेवों में (लुत्फ़ अंदोज़ होंगे)।

لَّا مَقۡطُوۡعَةٍ وَّ لَا مَمۡنُوۡعَةٍ ﴿٣٣﴾

33. जो न (कभी) ख़त्म होंगे और न उन (के खाने)की मुमानिअ़त होगी।

وَّ فُرُشٍ مَّرۡفُوۡعَةٍ ﴿٣٤﴾

34. और (वोह) ऊंचे (पुर शिकोह) फ़र्शों पर (क़ियाम पज़ीर) होंगे।

اِنَّاۤ اَنۡشَاۡنٰهُنَّ اِنۡشَآءً ﴿٣٥﴾

35. बेशक हमने इन (हूरो) को हुस्नो (लताफ़त की आईना दार) ख़ास ख़िल्क़त से पैदा फ़रमाया है।

فَجَعَلۡنٰهُنَّ اَبۡكَارًا ﴿٣٦﴾

36. फिर हमने उनको कुंवारिया बनाया है।

عُرُبًا اَتۡرَابًا ﴿٣٧﴾

37. जो खूब महब्बत करनेवाली हम उम्र (अज़्वाज) हैं।

لِّاَصۡحٰبِ الۡيَمِيۡنِ ﴿٣٨﴾

38. येह (हूरें और दीगर ने'मत) दाएं जानिबवालों के लिये हैं।

ثُلَّةٌ مِّنَ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿٣٩﴾

39. और (उनमें) बड़ी जमाअ़त अगले लोगों में से होगी।

وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الۡاٰخِرِيۡنَ ﴿٤٠﴾

40. और (उनमें) पिछले लोगों में से (भी) बड़ी ही जमाअ़त होगी।

وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ؕ ﴿۴۱﴾

41. और बाएं जानिबवाले क्या (ही बुरे लोग) हैं बाएं जानिबवाले।

فِیْ سَمُوْمٍ وَّ حَمِیْمٍ ۙ ﴿۴۲﴾

42. जो दोज़ख़ की सख़्त गर्म हवा और खौलते हुए पानी में।

وَّ ظِلٍّ مِّنْ یَّحْمُوْمٍ ۙ ﴿۴۳﴾

43. और सियाह धुवें के साए होंगे।

لَّا بَارِدٍ وَّ لَا كَرِیْمٍ ﴿۴۴﴾

44. जो न (कभी) ठंढा होगा और न फ़र्हत बख़्श होगा।

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِیْنَ ۚ ﴿۴۵﴾

45. बेशक वोह (अहले दोज़ख़) इससे पहले (दुनिया में) खुश हाल रेह चुके थे।

وَ كَانُوْا یُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِیْمِ ۚ ﴿۴۶﴾

46. और वोह गुनाहे अज़ीम (या'नी कुफ़्रो शिर्क) पर इसरार किया करते थे।

وَ كَانُوْا یَقُوْلُوْنَ ۙ اَىِٕذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ ﴿۴۷﴾

47. और कहा करते थे कि कया जब हम मर जाएंगे और हम ख़ाक (का ढेर) और (बोसीदह) हड्डियां हो जाएंगे तो कया हम (फिर ज़िन्दा कर के) उठाए जाएंगे।

اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿۴۸﴾

48. और क्या हमारे अगले बापदादा भी (ज़िन्दा किए जाएंगे)।

قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِیْنَ وَ الْاٰخِرِیْنَ ۙ ﴿۴۹﴾

49. आप फ़रमा दें बेशक अगले और पिछले।

لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِیْقَاتِ یَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۵۰﴾

50. (सब के सब) एक मुअ़य्यन दिन के मुक़र्ररह वक़्त पर जमा' किए जाएंगे।

ثُمَّ اِنَّكُمْ اَیُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ ﴿۵۱﴾

51. फिर बेशक तुम लोग ऐ गुमराहो ! झुटलाने वालों !

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ ﴿۵۲﴾

52. तुम ज़रूर कांटे दार (थूहड़ के) दरख़्त से खानेवाले हो।

فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۚ ﴿۵۳﴾

53. सो उससे अपने पेट भरने वाले हो।

فَشٰرِبُوْنَ عَلَیْهِ مِنَ الْحَمِیْمِ ۚ ﴿۵۴﴾

54. फिर उस पर सख़्त खौलता पानी पीने वाले हो।

فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾

55. पस तुम सख़्त पियासे ऊंट के पीने की तरह पीने वाले हो।

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾

56. येह क़ियामत के दिन उनकी ज़ियाफ़त होगी।

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

57. हम ही ने तुम्हें पैदा किया था फिर तुम (दोबारा पैदा किए जाने की) तस्दीक़ क्यों नहीं करते ?

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. भला येह बताओ जो नुत्फ़ा (तौलीदी क़त्रा) तुम (रहम मे) टपकाते हो।

ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾

59 तो क्या उस (से इन्सान) को तुम पैदा करते हो या हम पैदा फ़रमाने वाले हैं।

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَ مَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾

60. हम ही ने तुम्हारे दरमियान मौत को मुक़र्रर फ़रमाया है और हम (इस के बा'द फिर ज़िन्दा करने से भी) आजिज़ नहीं हैं।

عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

61. इस बात से (भी आजिज़ नहीं हैं) कि तुम्हारे जैसे औरों के बदल (कर बना) दें और तुम्हें ऐसी सूरत में पैदा कर दें जिस तुम जानते भी न हो।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. और बेशक तुमने पहली पैदाइश (की हक़ीक़त) मा'लूम कर ली फिर तुम नसीहत क़ुबूल क्यों नहीं करते।

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. भला येह बताओ जो (बीज) तुम काश्त करते हो।

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. तो क्या उस (से खेती) को तुम उगाते हो या हम उगाने वाले हैं ?

لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. अगर हम चाहें तो उसे रेज़ा रेज़ा कर दें फिर तुम तअ़ज्जुब और नदामत ही करते रेह जाओ।

اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. (और केहने लगो) : हम पर तावान पड़ गया।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. बल्कि हम बे नसीब होगए।

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾

68. भला येह बताओ जो पानी तुम पीते हो।

ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. कया तुम ने उसे बादल से उतारा है या हम उतारने वाले हैं?

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. अगर हम चाहें तो उसे खारी बना दें, फिर तुम शुक्र अदा क्यों नहीं करते?

اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾

71. भला येह बताओ जो आग तुम सुलगाते हो।

ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾

72. कया इसके दरख़्त को तुमने पैदा किया है या हम (इसे) पैदा परमाने वाले हैं?

نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّ مَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾

73. हम ही ने इस (दरख्त की आग) को (आतिशे जहन्नम की) याद दिलाने वाली (नसीहतो इब्रत) और जंगलों के मुसाफिरों के लिये बाइसे मनफ़ेअ़त बनाया है।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾

74. सो अपने रब्बे अज़ीम के नाम की तस्बीह किया करें।

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾

75. पस में उन जग्हों की कसम खाता हूं जहां जहां कुर्आन के मुख्तलिफ हिस्से (रसूले अरबी ﷺ पर) उतरते हैं ★

وَ اِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾

76. और अगर तुम समझो तो बेशक येह बहोत बड़ी क़सम है।

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾

77. बेशक येह बड़ी अज़मतवाला कुरआन है (जो बड़ी अज़मत वाले रसूल ﷺ पर उतर रहा है)।

★ येह तर्जुमा हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अब्बास के बयान कर्दा मा'ना पर किया गया है, मज़ीद हज़रते इकरमा, हज़रते मुजाहिद, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़बैर, हज़रते सदी, हज़रते फरा और हज़रते जुजाज रदियल्लाहु अन्हुम और दीगर अइम्मए तफ़्सीर का क़ौल भी येही है, और सियाक़े कलाम भी इसी का तक़ाज़ा करता है, पीछे सूरतुन नज्म में हजूर नबिय्ये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम को नज्म कहा गया है यहां कुरआन की सूरतों को नुजूम कहा गया है हवालाजात के लिए मुलाहिज़ा करें (तफ्सीरे बग़वी, खाज़िन, तिब्री ,दुर्रे मन्सूर, अल कश्शाफ, तफ्सीरे इब्ने अबी हातिम, रूहुल मआ़नी, इब्ने कसीर, अल लुबाब, अल बहरुल मुहीत, जुमल, ज़ादुल मसीर, फत्हुल क़दीर, अल मज़हरी, अल बैज़ावी, तफ़्सीरे अबू सऊ़द और मजमउ़ल बयान।

فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۙ﴿۷۸﴾

78. (इससे पहले येह) लौहे महफूज़ में (लिखा हुवा)है।

لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ؕ﴿۷۹﴾

79. इसको पाक (तहारत वाले) लोगों के सिवा कोई नहीं छुएगा।

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۰﴾

80. तमाम जहानों के रब की तरफ से उतारा गया है।

اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ۙ﴿۸۱﴾

81. सो क्या तुम उसी कलाम की तह्क़ीर करते हो?

وَ تَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ
تُكَذِّبُوْنَ ﴿۸۲﴾

82. और तुमने अपना रिज़्क़ (और नसीब) इसी बात को बना रख्खा है कि तुम (उसे)झुटलाते रहो।

فَلَوْلَاۤ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ۙ﴿۸۳﴾

83. फिर क्यों नहीं (रूह़ को वापस लौटा लेते) जब वोह (परवाज़ करने के लिये)ह़लक़ तक आ पहुंचती है?

وَ اَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ۙ﴿۸۴﴾

84. और तुम उस वक़्त देखते ही रेह जाते हो।

وَ نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَ لٰكِنْ
لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿۸۵﴾

85. और हम उस (मरनेवाले) से तुम्हारी निस्बत ज़ियादा करीब होते हैं लेकिन तुम (हमें)देखते नहीं हो।

فَلَوْلَاۤ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ۙ﴿۸۶﴾

86. फिर क्यों नहीं ऐसा कर सक्ते। अगर तुम किसी की मिल्को इख़्तियार में नहीं हो।

تَرْجِعُوْنَهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۸۷﴾

87. कि उस (रूह़)को वापस फेर लो अगर तुम सच्चे हो।

فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۙ﴿۸۸﴾

88. फिर अगर वोह (वफ़ात पानेवाला) मुकर्रिबीन में से था।

فَرَوْحٌ وَّ رَيْحَانٌ ۙ۬ وَّ جَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿۸۹﴾

89. तो (इसके लिये) सुरूरो फ़रहत और रूहानी रिज़्क़ो इस्तराह़त और ने'मतों भरी जन्नत है।

وَ اَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۙ﴿۹۰﴾

90. और अगर वोह अस्ह़ाबुल यमीन में से था।

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ؕ﴿۹۱﴾

91. तो (उससे कहा जाएगा) तुम्हारे लिए दाएं जानिबवालों की तरफ़ से सलाम है (या ऐ नबी ! आप पर अस्ह़ाबे यमीन की जानिब से सलाम है)।

وَ اَمَّاۤ اِنۡ كَانَ مِنَ الۡمُكَذِّبِيۡنَ الضَّآلِّيۡنَ ﴿۹۲﴾

92. और अगर वोह मरनेवाला झुटलानेवाले गुमराहों में से था।

فَنُزُلٌ مِّنۡ حَمِيۡمٍ ﴿۹۳﴾

93. तो (उसकी) सख़्त खौलते हुए पानी से ज़ियाफ़त होगी।

وَّ تَصۡلِيَةُ جَحِيۡمٍ ﴿۹۴﴾

94. और (उसका अंजाम) दोज़ख़ में दाख़िल कर दिया जाना है।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الۡيَقِيۡنِ ﴿۹۵﴾

95. बेशक येही क़तई तौर पर ह़क़्क़ुल यक़ीन है।

فَسَبِّحۡ بِاسۡمِ رَبِّكَ الۡعَظِيۡمِ ﴿۹۶﴾

96. सो आप अपने रब्बे अ़ज़ीम के नाम की तस्बीह़ किया करें।

ع ۳ ۲۲ ۱۶

आयातुहा 29 | 57 सूरतुल ह़दीदि मक्किय्यतुन 94 | रुकूआ़तुहा 4

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۱﴾

1. अल्लाह ही की तस्बीह़ करते हैं जो भी आस्मानों और ज़मीन में हैं, और वोही बड़ी इ़ज़्ज़तवाला बड़ी ह़िक्मत वाला है।

لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ۚ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ ۚ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۲﴾

2. उसी के लिये आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत है, वोही जिलाता और मारता है, और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

هُوَ الۡاَوَّلُ وَالۡاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَ الۡبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ﴿۳﴾

3. वोही (सब से) अव्वल और (सब से) आख़िर है और (अपनी क़ुदरत के ए'तिबार से) ज़ाहिर और अपनी ज़ात (के ए'तिबार से) पोशीदा है, और वोह हर चीज़ को ख़ूब जाननेवाला है।

هُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ فِىۡ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ ؕ يَعۡلَمُ مَا يَلِجُ فِى

4. वोही है जिसने आस्मानों और ज़मीन को छे अद्वार में पैदा फ़रमाया फिर काइनात की मस्नदे इक़्तिदार पर जल्वा अफ़रोज़ हुआ (या'नी पूरी काइनात को अपने अम्र के साथ मुनज़्ज़म फ़रमाया), वोह जानता है जो कुछ

الْاَرْضِ وَ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٤

ज़मीन में दाख़िल होता है और जो कुछ उसमें से ख़ारिज होता है और जो कुछ आस्मानी कुर्रों से उतरता (या निकलता) है या जो कुछ उनमें चढ़ता (या दाख़िल होता) है, वोह तुम्हारे साथ होता है तुम जहां कहीं भी हो, और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो (उसे) खूब देखनेवाला है।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٥

5. आस्मानों और ज़मीन की सारी सल्तनत उसी की है, और उसी की तरफ़ सारे उमूर लौटाए जाते हैं।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٦

6. वोही रात को दिनमें दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है,और वोह सीनों की (पोशीदा) बातों से भी खूब बा ख़बर है।

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝٧

7. अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान लाओ और उस (मालो दौलत) में से ख़र्च करो जिसमें उसने तुम्हें अपना नाइब (व अमीन) बनाया है, पस तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने ख़र्च किया उनके लिए बहुत बड़ा अज्र है।

وَ مَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَ الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَ قَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨

8. तुम्हें क्या हे गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालांकि रसूल (ﷺ) तुम्हें बुला रहे हैं कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और बेशक (अल्लाह) तुम से मज़बूत अ़हद ले चुका है, अगर तुम ईमान लानेवाले हो।

هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٩

9. वोही है जो अपने (बरगुज़ीदा) बंदे पर वाज़ेह निशानियां नाज़िल फ़रमाता है ताकि तुम्हें अंधेरे से रौशनी की तरफ़ निकाल ले जाए, और बेशक अल्लाह तुम पर निहायत शफ़्क़त फ़रमानेवाला निहायत रह़म फ़रमाने वाला है।

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ
لِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ
الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ
دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ
وَ قٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۰﴾ ع

10. और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते हालांकि आस्मानों और ज़मीन की सारी मिल्कियत अल्लाह ही की है (तुम तो फ़क़त उस मालिक केनाइब हो) तुम में से जिन लोगों ने फ़त्हे (मक्का) से पहले (अल्लाहकी राहमें अपना माल) ख़र्च किया और क़िताल किया वोह (और तुम) बराबर नहीं हो सक्ते, वोह उन लोगों से दर्जे में बहुत बुलंद हैं जिन्होंने बाद में माल ख़र्च किया है, और क़िताल किया है, मगर अल्लाहने हुस्ने आख़िरत (या'नी जन्नत) का वा'दा सबसे फरमा दिया है, और अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उन से खूब आगाह है।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا
حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ
كَرِيْمٌ ﴿۱۱﴾

11. कौन शख़्स है जो अल्लाह को क़र्ज़े ह़सना के तौर पर क़र्ज़ दे तो वोह उसके लिये उस (क़र्ज़) को कई गुना बढ़ाता रहे और उसके लिए बड़ी अज़्मतवाला अज्र है।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۲﴾

12. (ऐ ह़बीब !) जिस दिन आप (अपनी उम्मत के) मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को देखेंगे उनका नूर उनके आगे और उनकी दाएं जानिब तेज़ी से चल रहा होगा (और उनसे कहा जाएगा) तुम्हें बिशारत हो आज (तुम्हारे लिए) जन्नतें हैं जिनके नीचे से नेहरें रवां हैं (तुम) हमेशा उनमें रहोगे, येही बहुत बड़ी कामयाबी है।

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ
نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ
فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ
بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ

13. जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें ईमानवालों से कहेंगे : ज़रा हम पर (भी) नज़रे (इल्तिफ़ात) कर दो हम तुम्हारे नूर से कुछ रौशनी ह़ासिल कर लें, उनसे कहा जाएगा तुम अपने पीछे पलट जाओ और (वहां जा कर) नूर तलाश करो (जहां तुम नूर का इन्कार करते थे) तो (उसी वक़्त) उनके दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिस में एक दरवाज़ा होगा,

وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿١٣﴾

उसके अंदर की जानिब रह़मत होगी और उसके बाहर की जानिब उस तरफ़ से अज़ाब होगा।

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَ تَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ غَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾

14. वोह (मुनाफ़िक़) उन (मोमिनों) को पुकार कर कहेंगे : क्या हम (दुनिया में) तुम्हारी संगत में न थे? वोह कहेंगे : क्यों नहीं लेकिन तुमने अपने आप को (मुनाफ़िक़त के) फितने में मुब्तिला कर दिया था और तुम (हमारे लिए बुराई और नुक्सान के) मुन्तज़िर रहते थे और तुम (नुबुव्वते मुह़म्मदी ﷺ और दीने इस्लाम में) शक करते थे और बातिल उम्मीदों ने तुम्हें धोके में डाल दिया, यहां तक के अल्लाह का अम्रे (मौत) आ पहुंचा और तुम्हें अल्लाहके बारे में दग़ाबाज़ (शैतान) धोका देता रहा।

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّ لَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾

15. पस आज के दिन (ऐ मुनाफ़िक़ो!) तुम से कोई मुआवज़ा क़ुबूल नहीं किया जाएगा और न ही उनसे जिनहोंने कुफ़्र किया था और तुम (सब) का ठिकाना दोज़ख है, और येही (ठिकाना) तुम्हारा मौला (या'नी साथी) है, और वोह निहायत बुरी जगह है, (क्यों कि तुमने उनको मौला मानने से इन्कार कर दिया था जहां से तुम्हें नूरे ईमान और बख़्शिश की ख़ैरात मिलनी थी।

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾

16. क्या ईमानवालों के लिये (अभी) वोह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिये रिक़्क़त के साथ झुक जाएं और उस ह़क़ के लिए (भी) जो नाज़िल हुआ है और उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें इससे पहले किताब दी गई थी फिर उन पर मुद्दते दराज़ गुज़र गई तो उनके दिल सख़्त हो गए, और उनमें बहुत से लोग ना फ़रमान हैं।

اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ

17. जान लो कि अल्लाह ही ज़मीन को उसकी मुर्दनी के

بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾

बा'द ज़िन्दा करता है, बेशक हमने तुम्हारे लिए निशानियां वाज़ेह़ कर दी हैं ताकि तुम अ़क़्ल से काम लो।

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَ الْمُصَّدِّقٰتِ وَ
اَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۸﴾

18. बेशक सदक़ा-व-ख़ैरात देनेवाले मर्द और सदक़ा व-ख़ैरात देनेवाली औ़रतें और जिन्होंने अल्लाह को कर्ज़े ह़सना के तौर पर क़र्ज़ दिया उनके लिए (सद्क़ा-व-क़र्ज़े का अज्र) कई गुना बढ़ा दिया जाएगा और उनके लिए बड़ी इ़ज़्ज़तवाला सवाब होगा।

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖۤ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۚۖ وَ الشُّهَدَآءُ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ
وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۹﴾ ع ۲ ۹ ۱۸

19. और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए वोही लोग अपने रबके नज़दीक सिद्दीक और शहीद हैं, उनके लिये उनका अज्र (भी) है, और उनका नूर (भी) है, और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वही लोग दोज़ख़ी हैं।

اِعْلَمُوْۤا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ
وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ
وَ تَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ
كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ
نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ
يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ
شَدِيْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ
رِضْوَانٌ ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا
مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۲۰﴾

20. जान लो कि दुनिया की ज़िंदगी महज़ खेल और तमाशा है और ज़ाहिरी आराइश है और आपस में फ़ख़्र और खुद सताई है और एक दूसरे पर मालो औलाद में ज़ियादती की तलब है, इसकी मिसाल बारिश की सी है जिसकी पैदावार किसानों को भली लगती है फिर वोह ख़ुश्क हो जाती है फिर तुम उसे पक कर ज़र्द होता देखते हो फिर वोह रेज़ा रेज़ा हो जाती है,और आख़िरत में (ना फ़रमानों के लिये) सख़्त अ़ज़ाब है, और (फ़रमां बर्दारों के लिए) अल्लाह की जानिब से मग़फ़िरत और अ़ज़ीम ख़ुशनूदी है, और दुनिया की ज़िन्दगी धोके की पूंजी के सिवा कुछ नहीं है।

سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ

21. (ऐ बन्दो !) तुम अपने रब की बख़्शिश की तरफ़

جَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَ
الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ
يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيْمِ ﴿۲۱﴾

तेज़ लपको और जन्नत की तरफ़ (भी) जिस की चौड़ाई (ही) आस्मान और ज़मीन की वुस्अ़त जितनी है, उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए हैं, येह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिस वोह चाह़ता है उसे अता फ़रमा देता है,और अल्लाह अज़ीम फ़ज़्लवाला है।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ
وَ لَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿۲۲﴾ ۚ

22. कोई भी मुसीबत न तो ज़मीन में पहुंचती है और न तुम्हारी ज़िंदगियों में मगर वोह एक किताब में (या'नी लौहे महफ़ूज़ में जो अल्लाह के इल्मे क़दीम का मर्तबा है) इससे क़ब्ल के हम उसे पैदा करें (मौजूद)होती है, बेशक येह (इल्मे मुहीतो कामिल)अल्लाह पर बहुत आसान है।

لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَ
لَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا
يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۙ﴿۲۳﴾

23. ताकि तुम उस चीज़ पर ग़म न करो जो तुम्हारे हाथ से जाती रही और उस चीज़ पर न इतराओ जो उसने तुम्हें अ़ता की, और अल्लाह किसी तकब्बुर करनेवाले, फ़ख़्र करनेवाले को पसंद नहीं करता।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ
النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ
اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۴﴾

24. जो लोग (खुद भी) बुख़्ल करते हैं और (दूसरे) लोगों को (भी) बुख़्ल की तल्क़ीन करते हैं, और जो शख़्स (अह़कामे इलाही से) रूगर्दानी करता है तो बेशक अल्लाह (भी) बे परवाह है बड़ा क़ाबिले हम्दो सताइश है।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَ
اَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ
لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَ اَنْزَلْنَا
الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّ
مَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ

25. बेशक हमने अपने रसूलों को वाज़ेह निशानियों के साथ भेजा और हमने उनके साथ किताब और मीज़ाने अद्ल नाज़िल फ़रमाई ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ाइम हो सकें,और हमने (मा'दनियात में से) लोहा मुहय्या किया उसमें (आलाते ह़र्ब व दिफ़ाअ़ के लिए) सख़्त क़ुव्वत और लोगों के लिये (सन्अ़त साज़ी के कई दीगर) फ़वाइद हैं और (येह इस लिये किया) ताकि अल्लाह ज़ाहिर कर दे

يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۲۵﴾
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ
جَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ
وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَ كَثِيْرٌ
مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۲۶﴾
ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ
قَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ
الْاِنْجِيْلَ ۙ وَ جَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ
الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَ
رَهْبَانِيَّةَ ۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا
عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ
فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۲۷﴾

कि कौन उसकी और उसके रसूलों की (या'नी दीने इस्लाम की) बिन देखे मदद करता है, बेशक अल्लाह (खुद ही) बड़ी कुव्वतवाला बडे ग़ल्बेवाला है.

26. और बेशक हमने नूह और इब्राहीम (عليه السلام) के भेजा और हमने दोनों की औलाद में रिसालत और किताब मुकर्रर फ़रमा दी तो उनमें से (बा'ज़) हिदायत याफ़्ता हैं, और उनमें से अक्सर लोग ना फ़रमान हैं।

27. फिर हमने उन रसूलों के नुक़ूशे क़दम पर (दूसरे) रसूलों को भेजा और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरयम (عليه السلام) को भेजा और हमने उन्हें इंजील अ़ता की और हमने उन लोगों के दिलों में जो उनकी (या'नी ईसा عليه السلام की सहीह़) पैरवी कर रहे थे शफ़्क़त और रह़मत पैदा कर दी, और रहबानिय्यत (या'नी इबादते इलाही के लिये तर्के दुनिया और लज़्ज़तों से कनारा कशी) की बिद्अ़त उन्हों ने खुद ईजाद कर ली थी, उसे हमने उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था, मगर (उन्हों ने रहबानिय्यत की येह बिद्अ़त) महज़ अल्लाह की रज़ा ह़ासिल करने के लिए (शुरूअ़ की थी) फिर उसकी अ़मली निगेह दाश्त का जो ह़क़ था वोह उसकी वैसी निगेहदाश्त न कर सके (या'नी उसे उसी जज़्बे और पाबंदी से जारी न रख सके),सो हमने उन लोगों को जो उनमें से ईमान लाए (और बिदअ़ते रहबानिय्यत को रज़ाए इलाही के लिए जारी रख्खे हुए थे) उनका अज्रो सवाब अ़ता कर दिया और उन में से अक्सर लोग (जो उसके तारिक हो गए और बदल गए) बहुत ना फ़रमान हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ﴿۲۸﴾

28. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और उस के रसूले (मुकर्रम ﷺ) पर ईमान ले आओ वोह तुम्हें अपनी रह़मत के दो ह़िस्से अ़ता फ़रमाएगा और तुम्हारे लिये नूर पैदा फ़रमा देगा जिस में तुम (दुनिया-व-आख़िरत में) चला करोगे और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा देगा, और अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला बहुत रहम फ़रमाने वाला है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۹﴾ ع ۴ ۲۰

29. (येह बयान इस लिए है) कि अहले किताब जान लें कि वोह अल्लाह के फ़ज़्ल पर कुछ कुदरत नहीं रखते और (येह) कि सारा फ़ज़्ल अल्लाह ही के दस्ते कुदरत में है वोह जिसे चाह्ता है अ़ता फ़रमाता है, और अल्लाह अ़ज़ीम फ़ज़्ल वाला है।